P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मरूस्थलीय प्रदेश (जैसलमेर के विशेष संदर्भ में) पर्यटन विकास की संभावनाएं – समस्याएँ एवं समाधान

राम स्वरूप जाट
व्याख्याता,
भूगोल विभाग,
जी. एस. एस. एस.,
सिनोदिया, जयपुर राजस्थान,
भारत

सारांश

स्वर्णनगरी जैसलमेर की स्थापना 1156 ई. राव जैसल द्वारा बसाया गया है। जिसका विस्तार राजस्थान के पश्चिमी भाग में $26^0$5′ से 28^0 उत्तरी अक्षांश व $69^0$30′ से 70^0 पूर्वी देशान्तर है इसका क्षेत्रफल 38401 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में बीकानेर, पूर्व में जोधपुर, पश्चिम में पाकिस्तान तथा दक्षिण में बाड़मेर है। यह सम्पूर्ण जिला 3 तहसीलों जैसलमेर, फतेहगढ़ व पोकरण में बंटा हुआ है। 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 699919 है लिंग अनुपात 852, साक्षरता दर 57.22% व घनत्व 17 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। तापमान अधिकतम 49^0C न्यून्तम 25^0C है।। औसत वर्षा 209.5 मिलीमीटर है।

जैसलमेर पर्यटन की दृष्टि से ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन स्थल है। जिसमें पूरे विश्व से पर्यटक यहाँ घूमने आते है। इसलिए सालभर सैलानियों का यहाँ तांता लगा रहता है। चमकते सूरज की रोशनी जब इन पीले पत्थरों पर पड़ती है तो पूरा शहर सोने की तरह चमकने लगता है।

अतः प्रस्तावित शोध अध्ययन में उपरोक्त संकल्पना की उपयोगिता को अपरिहार्य मानकर जैसलमेर में पर्यटन विकास की संभावनाऐं समस्याऐं एवं सामाधान विषय की व्याख्या करने के लिए क्रमबद्ध एवं पारिस्थितिकी उपागम का प्रयोग किया गया है जिससे पर्यटन एक भविष्य में उद्योग के रूप में उभरे।

मुख्य शब्द : पर्यटन, स्वर्णनगरी, मरूस्थलीय प्रदेश, उद्योग, पर्यटक।

प्रस्तावना

पर्यटन अब सैर–सपाटे और मनोरंजन के दायरे तक ही सीमित विषय नहीं रहा है। पर्यटन महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि, संस्कृति से जुड़ी ऐतिहासिक व पूरामहत्त्व के विषयों के साथ ही समाज के सभी स्तरों से जुड़ी विशिष्ट क्रिया या उद्योग बन गया है। राजस्थान में जैसलमेर की पहचान एक सांस्कृतिक व धार्मिक पर्यटन के प्रमुख राज्य के रूप में न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में है। पर्यटकों के लिए मरूस्थलीय क्षेत्र में कितनी विविधताऐं है, उतनी विश्व में अन्यत्र कहीं भी नहीं है।

अध्ययन क्षेत्र

स्वर्णनगरी जैसलमेर राजस्थान का सबसे खुबसूरत शहर है और जैसलमेर पर्यटन का सबसे आकर्षित स्थल माना जाता है। स्वर्णनगरी के नाम से विख्यात इस शहर की स्थापना 1156 ईस्वी में राव जैसल द्वारा बनाया गया। इस शहर की एक कहावत प्रचलित है ''यहाँ पत्थर के पैर, लोहे का शरीर और काढ के घोड़े पर सवार होकर ही पहुँचा जा सकता है।'' यहाँ नक्काशीदार हवेलियाँ, गलियों, प्राचीन जैन मन्दिरों, महलों और उत्सवों के प्रसिद्ध है। निकट ही 'सम गाँव' में रेत के टीलों का पर्यटन की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। यहाँ का सोनार किला राजस्थान के श्रेष्ठ धान्वन दुर्गों में माना जाता हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्थिति

भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित राजस्थान प्रदेश के पश्चिम भाग में जैसलमेर जिला एक विस्तृत मरूस्थलीय भू–भाग है। इसकी स्थिति $26^0 5'$ से 28^0 उत्तरी अक्षांश व $69^0 30'$ से 70^0 पूर्व देशान्तर है। इसका क्षेत्रफल 38401 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में बीकानेर, पूर्व में जोधपुर, पश्चिम में पाकिस्तान तथा दक्षिण में बाड़मेर है।

तापमान

ग्रीष्मकाल में अधिकतम तापमान 49^0c व न्यूनतम तापमान 25^0c तथा शीतकाल में अधिकतम तापमान 23. 6^0c तथा न्यूनतम 5^0c होता है।

वर्षा

यहाँ पर औसत वर्षा 209.5 मिलीमीटर है।

उच्चावच

समुद्र तल से औसत ऊँचाई 224 मीटर है।

अपवाह तंत्र

यहाँ की एकमात्र काकनी नदीं प्रवाहित होती है।

जनसंख्या

2011 में जनसंख्या आंकड़ों के अनुसार कुल जनसंख्या 699919 है। लिंग अनुपात 852, साक्षरता दर 57.22% व घनत्व 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। सम्पूर्ण जैसलमेर जिला 3 तहसीलों जैसलमेर, फतेहगढ़ व पोकरण में बंटा हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. नये युग की नई चुनौतियों के रूप में मरूस्थलीय प्रदेश पर्यटन के रूप में उभरना।
2. थार के मरूस्थल में पर्यटन विकास में आ रही बाधाओं को इंगित करना ताकि उनके समाधान सुनिश्चित किये जा सके।
3. बदली हुई परिस्थितियों में अध्ययन क्षेत्र के सतत् विकास एवं नियोजन के लिए संसाधनों का अनुकूलन उपयोग हेतु एक सम्पूर्ण कार्य योजना तैयार करना।
4. पर्यटन के फलस्वरूप इस क्षेत्र के लोगों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. जैसलमेर जिले की स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों पर्यटन विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
2. क्षेत्र में पर्यटन विकास आर्थिक समृद्धि में वृद्धि हुयी है।

साहित्यावलोकन

डॉ. हरि मोहन सक्सेना ने (2016) में पर्यटन विकास के स्थलों का वर्गीकरण 'राजस्थान का भूगोल' पुस्तक में किया।

डॉ. एल.आर. भल्ला ने (2018) में प्रमुख पर्यटक स्थलों की पहचान 'राजस्थान का भूगोल' में किया।

राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित 'सूजस' में समय–समय पर जैसलमेर में पर्यटन विकास की अपार संभावनाऐं पर लेख में पर्यटन को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

शोधाविधि

अध्ययन मरूस्थलीय प्रदेश में पर्यटन विकास की संभावनाओं से संबंधित है। अतः समस्याओं को एकत्रण प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर पर किया गया है।

प्राथमिक स्रोत

1. प्रत्यक्ष अवलोकन
2. मौखिक अन्वेषण
3. प्रश्नावली व अनुसूची

द्वितीयक स्रोत

1. पर्यटन विभाग – जयपुर, राजस्थान
2. जनगणना विभाग
3. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर समय–समय पर प्रस्तुत विचारों एवं कार्यक्रमों का वर्णन।

व्यवसायिक संरचना

जैसलमेर जिला मुख्यालय होने एवं इसका विस्तृत पाश्चात क्षेत्र होने से यह प्रशासनिक, व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र है। विभागीय अनुमान के अनुसार वर्ष 2011 में कुल जनसंख्या में से 29292 व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत थे।

व्यावसायिक संरचना, जैसलमेर

क्र. सं.	व्यवसाय	कामगार 1991	कामगारों का प्रतिशत	कामगार 2001	कामगारों का प्रतिशत	कामगार 2011	कामगारों का प्रतिशत
1.	वृद्धि एवं इससे सम्बन्धित	687	5.78	920	5.01	1320	4.59
2.	निर्माण	1644	13.84	3200	17.42	1606	15.75
3.	व्यापार एवं वाणिज्य	1945	16.38	2570	13.99	3672	12.51
4.	उद्योग व पर्यटन	956	8.05	4850	10.07	5894	20.05
5.	परिवहन एवं संचार	731	6.16	1280	6.97	2525	6.09
6.	अन्य सेवाऐं	5913	49.79	8549	46.54	11775	40.20
	योग	11,876	100.00	18369	100.00	29292	100.00

स्रोतः– भारतीय जनगणना विभागीय अनुमान।

पर्यटकों का विवरण, जैसलमेर

वर्ष	भारतीय पर्यटक	विदेशी पर्यटक
2001	103109	46107
2002	96593	25670
2003	132834	50211
2004	182784	81015
2005	177360	98871
2006	204911	117364
2007	211798	128389
2008	228854	134978
2009	248667	98350
2010	274469	113288
2011	281156	121967
2012	100958	49119
2013	122883	73607
2014	250716	93276
2015	235713	84533
2016	259497	90667
2017	493755	122851
2018	343343	75519

स्रोतः– कार्यालय, पर्यटन अधिकारी, जैसलमेर।

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि जैसलमेर में पर्यटकों की संख्या 2001 से लेकर 2017 तक उतरोत्तर रूप से वृद्धि हुई है।

जैसलमेर जिले के पर्यटन स्थल

जैसलमेर जिले में पर्यटन की दृष्टि से ऐतिहासिक धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटक स्थल है। राज्य सरकार द्वारा इन स्थलों की ओर ध्यान दिया जा रहा है जिससे पूरे विश्व से पर्यटक यहाँ घूमने आते है इसलिए सालभर सैलानियों का यहाँ तांता लगा रहता है। चमकते सूरज की रोशनी जब इन पीले पत्थरों से बनी हवेलियों पर पड़ती है तो यह हवेलियाँ सोने की तरह चमकने लगती है जिसके कारण इस नगर को स्वर्ण नगरी भी कहा जाता है।

सोनार जिला

त्रिकूट पहाड़ी पर 80 मीटर की ऊँचाई पर रावल जैसल द्वारा पीले पत्थरों को बिना चूने के जोड़कर बनाया गया। विशाल दुर्ग जो दूर से स्वर्णिम शोभा लिये प्रतीत होता है। इस किले के चार द्वार है अम्बे पोल, सूरज पोल, गणेश पोल और हवा पोल तथा 99 बुर्ज है। सानोर किले के भीतर मोती महल, रंग महल, राजविलास आदि महत्त्वपूर्ण इमारतें विशेष रूप से दर्शनीय है। महल स्थापत्य कला और बेहतरी, कारीगरी नमूना है।

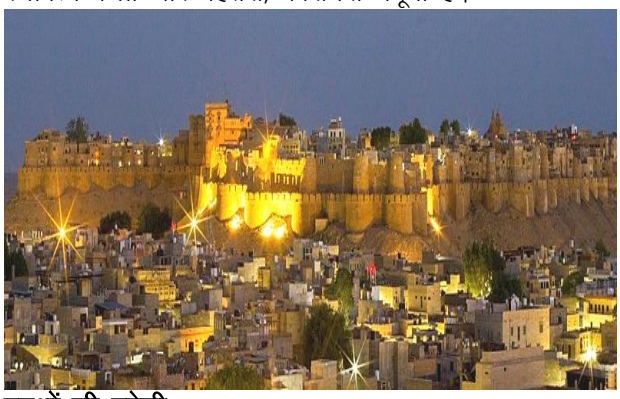

पटुओं की हवेली

जैन भवन के पास बनी ये 5 हवेलियों का निर्माण 1800 से 1860 के बीच गुमान मल बाफना के 5 पुत्रों द्वारा करवाया गया। इन हवेलियों के जालीदार

झरोखे, मेहराबदार छज्जे तथा रंगीन कांच का जड़ाउ काम देखने योग्य है।

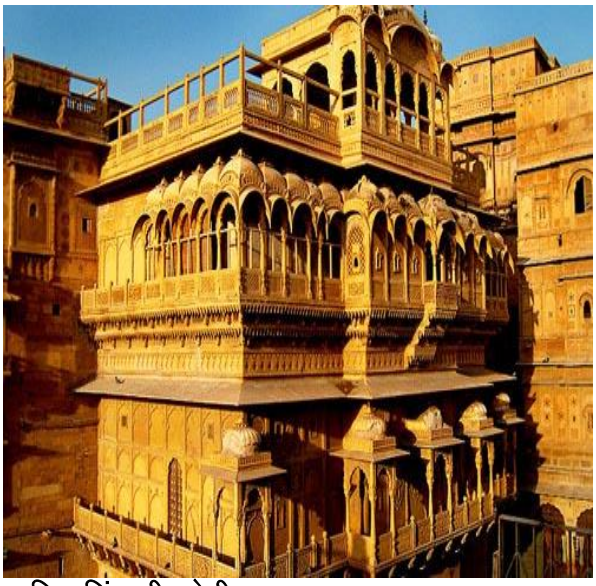

सालिम सिंह की हवेली

सोनार किले की पूर्वी ढलान पर स्थित यह हवेली दीवान सालिम सिंह द्वारा सन् 1825 में बनवाई गई थी। यह हवेली जैसलमेर के दर्शनीय स्थल में सबसे सुन्दर व अन्य हवेलियों में से एक है।

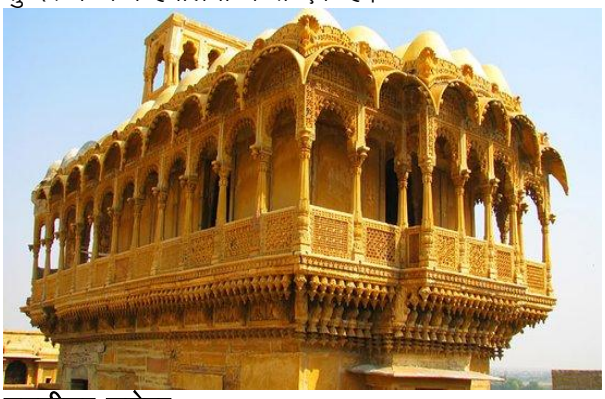

गड़सीसर सरोवर

जैसलमेर के पूर्वी द्वार पर बना सरोवर शहरवासियों का प्रमुख जल स्रोत है। सरोवर के किनारे महल, छतरियाँ, मन्दिर, बगीची पर आदि बने हुए है जिनकी सुन्दरता देखते ही बनती है।

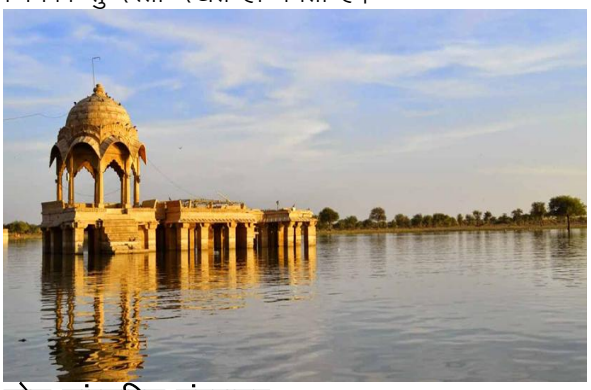

लोक सांस्कृतिक संग्रहालय

इसमें जैसलमेर की लोक संस्कृति से जुड़ी वस्तुऐं, वाद्ययंत्र, वस्त्राभूषण कलात्मक चित्र जैसलमेर के इतिहास संबंधित दस्तावेज कठपुतलियाँ आदि संग्रहित है। इस संग्रहालय की स्थापना लेखक, कवि एवं पेशे से शिक्षक नंदकिशोर शर्मा ने सन् 1948 ईस्वी में की थी।

अमर सागर झील

इसका निर्माण महारावल अमर सिंह ने सन् 1784 ईस्वी करवाया था। इस झील के दूसरे छोर पर हिम्मत राम श्री बाफना द्वारा सन् 1817 में बनवाया गया एक खूबसूरत जैन मन्दिर है।

बड़ा बाग व छतरियाँ

यह स्थान महारावलों का शमशान है। यहाँ महारावलों की स्मृति स्वरूप बनी कलात्मक छतरियाँ देखने योग्य है।

लोद्रवा

काक नदी तट पर बसा नगर जैसलमेर से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, यहाँ स्थित खूबसूरत जैन मन्दिर मुख्य रूप से दर्शनीय है। जैसलमेर नगर बनने से पूर्व यह नगर भाटियों की राजधानी बना हुआ है। इसमे 23वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ की आर्कषक मूर्ति स्थापित है।

वुड फासिल पार्क

जैसलमेर से 17 किलोमीटर की दूरी पर बीकानेर मार्ग पर स्थिति आंकल गांव में बनाया गया है। यहाँ 18 करोड साल पुराने पेड़–पौधे, जीव–जन्तु के अवशेषों को, जो अब पत्थरों से तब्दील हो चुके है, सुरक्षित रखा गया है। सैलानी इन वस्तुओं को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते है।

सैम के रेतीले टीले

जैसलमेर से 42 किलोमीटर दूर है। यहाँ दूर–दूर तक रेत की रेत दिखाई देती है। रेत के ऊँचे–नीचे टीले जिन्हें देखने के लिए अकसर सैलानी राजस्थान की यात्रा पर आते है। इनमें डूबते सूरज का नज़ारा यहाँ से बड़ा ही आकर्षक दिखाई देता है। यहाँ रेतीले रेगिस्तान में ऊँट की सवारी का अपना अलग ही मज़ा है।

राष्ट्रीय मरूउद्यान

जैसलमेर से करीब 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, यहाँ राजस्थान के राज्य पक्षी गोड़ावन को आसानी से देखा जा सकता है। इसके अलावा यहाँ काला हिरण, चिंकारा, रेगिस्तानी लोमड़ी, भेड़िया, तीतर और सोन चिड़िया भी बहुतायत रूप से पायी जाती है।

पर्यटकों को आकर्षित इसके लिए अपनी लोक संस्कृति से अपने अलग–अलग अंदाज में लोक–संगीत, लोक–नृत्य और बेहतरीन ढंग से लोक बाधों का प्रस्तुतीकरण कर अनूठे ढंग से लोक संस्कृति के रंग बिखेरे ।

जैसलमेर जिले में पर्यटन की दृष्टि से अखिल संभावनाऐं विद्यमान है। इस प्रदेश की गौरव गाथा, कला संस्कृति, प्राकृतिक सौन्दर्य, चित्रकला, मूर्तिकला, साहित्य और ऐतिहासिक स्थलों को देश–विदेश में सराहा जाता है। यहाँ के किला और प्राचीन स्थलों में हमेशा से देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया है।

समस्याएँ

1. होटल टैंट व परिवहन की उचित सुविधा न होना।
2. विदेशी पर्यटकों के लिए आवास की समस्या।
3. सैम में आधारभूत सुविधाओं की कमी।
4. मरूस्थलीय क्षेत्र का विस्तार।
5. भूगर्भिक जल की कमी।
6. पारम्परिक बेरियों की अनदेखी।
7. सरकारी प्रोत्साहन तय समय पर नहीं मिलना।
8. दक्ष/प्रक्षिशित मार्गदर्शकों का अभाव।
9. सुरक्षा का अभाव।

समाधान

1. निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ाया जाये।
2. खिसकते रेतीले टीलों क्षेत्रों को जैविक हस्तक्षेप से बचाने के लिए बाड़ लगाना।
3. रेत के इन टीलों का नियमित और उचित प्रबंधन करना।
4. किलो, हवेलियाँ का जीर्णोद्धार करवाया जाये।
5. सरकारी कार्यक्रमों की सहभागिता ज्यादा से ज्यादा हो ।
6. पारंपरिक, ऐतिहासिक, लोक संस्कृति लोक नाट्य को प्रोत्साहन दिया जाये।
7. केमल सफारी को प्रोत्साहन दिया जाए।

निष्कर्ष

सारांशतः शोधकर्ता ने जैसलमेर में पर्यटन विकास की संभावनाऐं का मूल्यांकन करने के पश्चात सतत् आर्थिक विकास हेतु जिस प्रबंधन एवं नियोजन को प्रस्तावित किया है यदि इन सम्पूर्ण नीतियों को स्थानीय जनता के सहयोग से क्रियान्वित किया जाये तो न मात्र बेरोजगारी को कम किया जा सकता है वरन जैसलमेर पर्यटन विकास का एक केन्द्र बन सकेगा तथा पर्यटन विकास की अपार संभावनाओं को सफल कर पायेगा जिससे वहाँ जैसलमेर सतत् आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर होगा साथ ही सामाजिक स्तर को भी ऊपर उठाने में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग 'सूजस वार्षिकांक' राजस्थान सरकार 2019 पृ.25
डाउन टू अर्थ सितम्बर 2019 पृ.40
डॉ. एल.आर. भल्ला ''राजस्थान का भूगोल'' 2018 पृ. 193, 203
प्रो. एच.एस.शर्मा ''राजस्थान का भूगोल'' पृ. 190
डॉ. एच.एम.सक्सेना ''राजस्थान का भूगोल'' पृ. 284
डॉ. पी.के.शर्मा ''राजस्थान का भूगोल'' पृ. 190